International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 15-05-2026, Accepted: 15-06-2026, Published: 30-06-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 390-393

प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत् शिक्षकों में विभिन्न सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता का अध्ययन

डॉ. कमल नारायण गजपाल[1], प्रकाश कुमार[2]
[1] शोध निर्देशक, विभागाध्यक्ष शिक्षा संकाय, प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी, रायपुर, छत्तीसगढ, भारत
[2] प्रशिक्षार्थी, प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी, रायपुर, छत्तीसगढ, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhssr.2026.12.2.12230

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों की विभिन्न सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना था। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोधकर्ता द्वारा निर्मित 30 मदों वाली प्रश्नावली का उपयोग किया गया। संकलित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन तथा ज–परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्दः सामाजिक समस्या, जागरूकता, शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, सामाजिक चेतना

मानव एक सामाजिक प्राणी है और उसका विकास समाज के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। वर्तमान समय में समाज अनेक गंभीर समस्याओं जैसे बाल श्रम, बाल विवाह, दहेज प्रथा, लैंगिक भेदभाव, नशाखोरी, अशिक्षा, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार तथा पर्यावरण प्रदूषण आदि से प्रभावित है। ये समस्याएँ न केवल व्यक्तियों के जीवन को प्रभावित करती हैं, बल्कि सामाजिक व्यवस्था एवं राष्ट्रीय विकास में भी बाधा उत्पन्न करती हैं। इन समस्याओं के समाधान हेतु सामाजिक जागरूकता एवं शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

सामाजिक समस्या ऐसी अवांछनीय स्थिति है जो समाज के एक बड़े वर्ग को प्रभावित करती है तथा सामाजिक कल्याण एवं विकास में बाधा उत्पन्न करती है। गरीबी, बेरोजगारी, बाल श्रम, बाल विवाह, दहेज प्रथा, लैंगिक असमानता, नशाखोरी एवं पर्यावरण प्रदूषण जैसी समस्याएँ समाज के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए सामूहिक प्रयास, सामाजिक चेतना तथा शिक्षा की आवश्यकता होती है। सामाजिक समस्याएँ समाज के मूल्यों एवं आदर्शों के विपरीत होती हैं और इनके समाधान के बिना स्वस्थ समाज की स्थापना संभव नहीं है। सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता का अर्थ इन समस्याओं की प्रकृति, कारणों, प्रभावों एवं समाधान के प्रति ज्ञान एवं संवेदनशीलता से है। जागरूक व्यक्ति सामाजिक बुराइयों को पहचानता है तथा उनके समाधान हेतु सकारात्मक भूमिका निभाने का प्रयास करता है। सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता सामाजिक न्याय, समानता एवं सामाजिक सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देती है। यह जागरूकता व्यक्तियों को समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करती है।

विद्यालय सामाजिक जागरूकता के विकास का प्रमुख केंद्र है तथा शिक्षक इस प्रक्रिया के मुख्य अभिकर्ता हैं। विशेष रूप से प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण एवं सामाजिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि शिक्षक स्वयं सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूक होंगे, तो वे विद्यार्थियों में भी सामाजिक चेतना, नैतिकता एवं उत्तरदायित्व की भावना विकसित कर सकेंगे। इसलिए प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की विभिन्न सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है।

अध्ययन का महत्व

प्रस्तुत अध्ययन "प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत् शिक्षकों में विभिन्न सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता का अध्ययन" वर्तमान सामाजिक एवं शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज समाज बाल श्रम, बाल विवाह, दहेज प्रथा, लैंगिक भेदभाव, नशाखोरी, अशिक्षा, पर्यावरण प्रदूषण तथा सामाजिक असमानता जैसी अनेक समस्याओं से प्रभावित है। इन समस्याओं के समाधान के लिए समाज में जागरूकता का विकास आवश्यक है, जिसमें शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। इसलिए शिक्षकों की सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता का अध्ययन समयानुकूल एवं प्रासंगिक माना जाता है।

यह अध्ययन शिक्षकों की सामाजिक समस्याओं के प्रति वर्तमान जागरूकता के स्तर को जानने में सहायक होगा। इसके माध्यम से यह स्पष्ट होगा कि शिक्षक विभिन्न सामाजिक समस्याओं के कारणों, प्रभावों एवं समाधान के प्रति कितने सजग हैं। साथ ही यह अध्ययन शिक्षक शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी बनाने हेतु उपयोगी जानकारी प्रदान करेगा, जिससे शिक्षकों की सामाजिक समझ एवं संवेदनशीलता को और विकसित किया जा सकेगा।

अंततः यह अध्ययन शैक्षिक, सामाजिक एवं शोधात्मक सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। यह न केवल शिक्षकों की सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता का आकलन करेगा, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा एक जागरूक, उत्तरदायी एवं प्रगतिशील समाज के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगा। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन का महत्व शिक्षा एवं समाज दोनों के लिए अत्यंत व्यापक एवं उपयोगी है।

संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन

किसी भी अनुसंधान की योजना बनाने से पूर्व उस विषय से संबंधित उपलब्ध साहित्य एवं पूर्व शोधों का अध्ययन करना आवश्यक होता है। इससे शोधकर्ता को विषय की वर्तमान स्थिति तथा अनुसंधान की दिशा का ज्ञान होता है। प्रस्तुत अध्ययन के संदर्भ में सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता, सामाजिक चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं शिक्षकों की भूमिका से संबंधित विभिन्न भारतीय एवं विदेशी अध्ययनों का अवलोकन किया गया।

भारत में किए गए शोध अध्ययन

एडम्स (2020): ने "शैक्षिक सुधार एवं शिक्षक जागरूकता" विषय पर अध्ययन किया। उद्देश्य शैक्षिक सुधारों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का अध्ययन करना था। परिकल्पना की गई कि शैक्षिक सुधार जागरूकता बढ़ाते हैं। शैक्षिक सुधार स्वतंत्र चर तथा जागरूकता आश्रित चर था। माध्य एवं मानक विचलन का प्रयोग किया गया। परिणामों में पाया गया कि शैक्षिक सुधारों से शिक्षकों की जागरूकता में वृद्धि हुई।

थॉमस (2019): ने "घरेलू हिंसा के प्रति शिक्षकों की जागरूकता" विषय पर अध्ययन किया। उद्देश्य घरेलू हिंसा के प्रति चेतना का अध्ययन करना था। परिकल्पना की गई कि महिला शिक्षक अधिक जागरूक होंगी। लिंग स्वतंत्र चर तथा घरेलू हिंसा जागरूकता आश्रित चर था। t–परीक्षण का प्रयोग किया गया। महिला शिक्षकों में अधिक जागरूकता पाई गई।

पटेल (2019): ने प्राथमिक शिक्षकों में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का अध्ययन किया। उद्देश्य सामाजिक उत्तरदायित्व का परीक्षण करना था। परिकल्पना की गई कि अनुभव के आधार पर अंतर होगा। अनुभव स्वतंत्र चर तथा सामाजिक उत्तरदायित्व आश्रित चर था। सहसंबंध (Correlation) का प्रयोग किया गया। अनुभव एवं सामाजिक उत्तरदायित्व में सकारात्मक संबंध पाया गया।

भारद्वाज (2019): ने सामाजिक मीडिया एवं शिक्षक जागरूकता का अध्ययन किया। उद्देश्य सामाजिक मीडिया के प्रभाव का परीक्षण करना था। परिकल्पना की गई कि सोशल मीडिया जागरूकता बढ़ाता है। सोशल मीडिया उपयोग स्वतंत्र चर तथा सामाजिक जागरूकता आश्रित चर था। सहसंबंध का प्रयोग किया गया। दोनों में सकारात्मक संबंध पाया गया।

समस्या का कथन

"प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत् शिक्षकों में विभिन्न सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता का अध्ययन।"

प्रकार्यात्मक परिभाषा

1. प्राथमिक विद्यालयः प्राथमिक विद्यालय से आशय ऐसे शैक्षणिक संस्थानों से है जहाँ कक्षा 1 से 5 तक के विद्यार्थियों को प्रारंभिक शिक्षा प्रदान की जाती है।

2. सामाजिक समस्याएँः सामाजिक समस्याएँ वे परिस्थितियाँ अथवा समस्याएँ हैं जो समाज के सामान्य विकास एवं सामाजिक व्यवस्था में बाधा उत्पन्न करती हैं। बाल श्रम, दहेज प्रथा, बाल विवाह, लैंगिक भेदभाव, नशाखोरी, अशिक्षा, घरेलू हिंसा तथा पर्यावरण प्रदूषण आदि सामाजिक समस्याओं के उदाहरण हैं।

3. सामाजिक जागरूकताः सामाजिक जागरूकता वह स्थिति है जिसमें व्यक्ति समाज में व्याप्त समस्याओं, असमानताओं एवं कुरीतियों को समझता है तथा उनके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है। प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक जागरूकता से अभिप्राय शिक्षकों की विभिन्न सामाजिक समस्याओं के प्रति समझ, संवेदनशीलता एवं समाज सुधार की भावना से है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

अध्ययन की परिसीमा

1. प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध अध्ययन हेतु रायपुर शहर का चयन किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन हेतु रायपुर जिले के 12 प्राथमिक विद्यालयों को चयन किया गया है।
3. प्रस्तुत लघुशोध में प्राथमिक विद्यालय से 60 महिला शिक्षिका तथा 60 पुरूष शिक्षकों को लिया गया है।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या में चयनित क्षेत्र के सभी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक सम्मिलित थे।

न्यादर्श

अध्ययन हेतु शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों से 120 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श पद्धति द्वारा किया गया।

चर

स्वतंत्र चरः सामाजिक समस्याएं
आश्रित चरः शिक्षकों की जागरूकता

उपकरण

अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित 30 कथनों वाली सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण

1. केन्द्रिय प्रवृत्ति का मापक – मध्यमान
2. प्रसार मापक की गणना हेतु – मानक विचलन
3. सार्थक अंतर के लिए – क्रांतिक अनुपात
4. सार्थक अंतर के लिए – टी–परीक्षण

परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं परिणाम

परिकल्पना 1

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

सारणी 1: शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता दर्शाने वाली सारणी

क्र. सं.	समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1	शासकीय शिक्षक	50	118.42	12.36	0.93	0.05 स्तर पर असार्थक
2	अशासकीय शिक्षक	50	116.18	11.84		

विश्लेषण

सारणी 4.1 के अनुसार शासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का माध्य 118.42 तथा मानक विचलन 12.36 प्राप्त हुआ, जबकि अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का माध्य 116.18 तथा मानक विचलन 11.84 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के माध्यों में 2.24 अंकों का अंतर पाया गया, जो यह दर्शाता है कि शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों का जागरूकता स्तर अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में कुछ अधिक है।

दोनों समूहों के माध्यों के अंतर की सांख्यिकीय सार्थकता ज्ञात करने हेतु 'क्रांतिक अनुपात' का प्रयोग किया गया। गणना द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात 0.93 है, जबकि 0.05 स्तर पर सारणीकृत ज–मूल्य 1.98 है। चूँकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात सारणीकृत ज–मूल्य से कम है, इसलिए दोनों समूहों के मध्य पाया गया अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है।

अतः शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

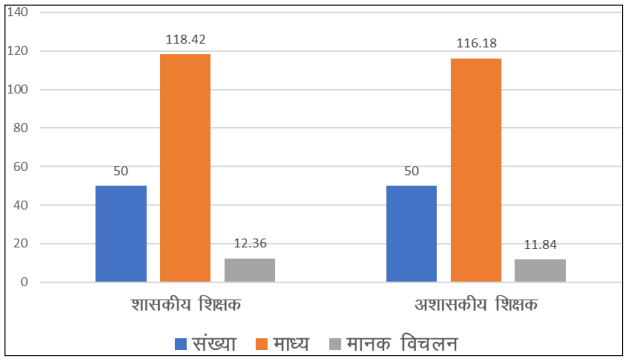

आरेख 1: शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता दर्शाने वाला आरेख

परिकल्पना 2

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों में सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

सारणी 2: शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों में सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता दर्शाने वाली सारणी

क्र. सं.	समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
1	शासकीय महिला शिक्षक	25	120.48	10.94	0.75	0.05 स्तर पर असार्थक
2	अशासकीय महिला शिक्षक	25	118.12	11.52		

विश्लेषण

सारणी 4.2 के अनुसार शासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों का माध्य 120.48 तथा मानक विचलन 10.94 प्राप्त हुआ, जबकि अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों का माध्य 118.12 तथा मानक विचलन 11.52 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के माध्यों में 2.36 अंकों का अंतर पाया गया।

दोनों समूहों के माध्यों के अंतर की सार्थकता ज्ञात करने हेतु ज–परीक्षण किया गया। प्राप्त ज–मूल्य 0.75 पाया गया, जबकि 0.05 स्तर पर सारणीकृत t–मूल्य 2.01 है। चूँकि प्राप्त ज–मूल्य सारणीकृत ज–मूल्य से कम है, अतः दोनों समूहों के मध्य पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है।

अतः शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों के सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

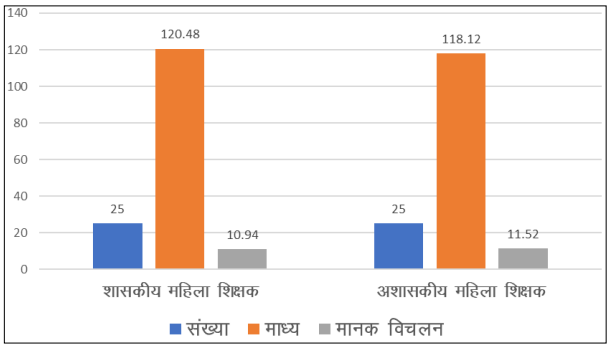

आरेख 2: शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों में सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता दर्शाने वाला आरेख

परिकल्पना 3

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों में सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

सारणी 3: शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों में सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता दर्शाने वाली सारणी

क्र.सं.	समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
1	शासकीय पुरुष शिक्षक	25	116.36	13.45	0.58	0.05 स्तर पर असार्थक
2	अशासकीय पुरुष शिक्षक	25	114.24	12.88		

विश्लेषण

सारणी 4.3 के अनुसार शासकीय विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों का माध्य 116.36 तथा मानक विचलन 13.45 प्राप्त हुआ, जबकि अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों का माध्य 114.24 तथा मानक विचलन 12.88 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के माध्यों में 2.12 अंकों का अंतर पाया गया।

दोनों समूहों के माध्यों के अंतर की सांख्यिकीय सार्थकता ज्ञात करने हेतु t–परीक्षण का प्रयोग किया गया। गणना द्वारा प्राप्त t–मूल्य 0.58 पाया गया, जबकि 0.05 स्तर पर सारणीकृत t–मूल्य 2.01 है। चूँकि प्राप्त t–मूल्य सारणीकृत t–मूल्य से कम है, इसलिए दोनों समूहों के मध्य पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है।

अतः शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों के सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

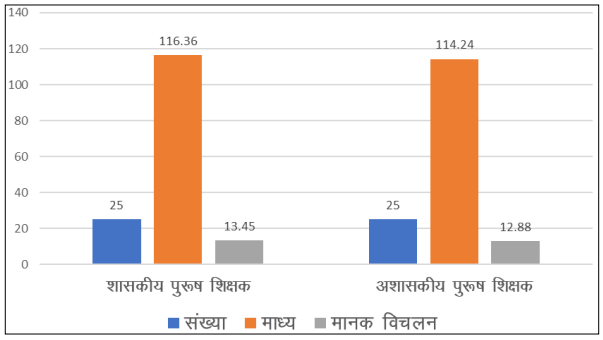

आरेख 3: शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों में सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता दर्शाने वाला आरेख

निष्कर्ष

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं :–

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता स्तर में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया। दोनों समूहों के शिक्षक सामाजिक समस्याओं के प्रति लगभग समान स्तर की जागरूकता रखते हैं।

2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। दोनों समूहों की महिला शिक्षकों में सामाजिक समस्याओं के प्रति समान स्तर की संवेदनशीलता एवं जागरूकता पाई गई।

3. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। दोनों समूहों के पुरुष शिक्षकों का सामाजिक समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण एवं समझ लगभग समान पाई गई।

सुझाव

1. शिक्षकों के लिए सामाजिक समस्याओं से संबंधित नियमित प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।
2. विद्यालय स्तर पर सामाजिक समस्याओं के संबंध में संगोष्ठी, कार्यशाला एवं जागरूकता अभियान आयोजित किए जाने चाहिए।
3. बाल श्रम, बाल विवाह, दहेज प्रथा एवं लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याओं के संबंध में विशेष जन–जागरूकता कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए।
4. विद्यालयों में विद्यार्थियों को सामाजिक समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाने हेतु विशेष गतिविधियाँ आयोजित की जानी चाहिए।

अनुकरणीय अध्ययन

1. माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया जा सकता है।
2. शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता एवं शिक्षक प्रभावशीलता के मध्य संबंध का अध्ययन किया जा सकता है।
4. सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के संबंध में अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ

1. अज़ेन, आई. (1991). नियोजित व्यवहार का सिद्धांत। ऑर्गेनाइज़ेशनल बिहेवियर एंड ह्यूमन डिसीजन प्रोसेसेज़, 50(2), 179–211। DOI: 10.1016/0749–5978(91)90020–T
2. एप्पल, एम. डब्ल्यू., एवं बीन, जे. ए. (2007). लोकतांत्रिक विद्यालय: प्रभावशाली शिक्षा के पाठ। हाइनमैन पब्लिशर्स।
3. केरलिंगर, एफ. एन., एवं ली, एच. बी. (2000). व्यवहारिक अनुसंधान की आधारशिलाएँ। हारकोर्ट।
4. कॉन्कलिन, एच. जी., एवं ह्यूजेस, एच. ई. (2016). करुणामय, आलोचनात्मक एवं न्यायोन्मुख शिक्षक शिक्षा की प्रक्रियाएँ। जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन, 67(1), 47–60। DOI: 10.1177/0022487115607346
5. डार्लिंग–हैमंड, एल. (2006). प्रभावशाली शिक्षक शिक्षा: शिक्षण के लिए सबक। जोसी–बास।
6. डार्लिंग–हैमंड, एल. (2017). विश्वभर में शिक्षक शिक्षा। यूरोपियन जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन, 40(3), 291–309। DOI: 10.1080/02619768.2017.1315399
7. डेलपिट, एल. (2006). अन्य लोगों के बच्चे: कक्षा में सांस्कृतिक संघर्ष। न्यू प्रेस।
8. डॉयल, एल., ईस्टरब्रुक, एम. जे., एवं हैरिस, पी. आर. (2024). यह समस्या है, लेकिन मेरी नहीं: शिक्षकों में पूर्वाग्रह–संबंधी संदेशों की स्वीकृति का अध्ययन। सोशल साइकोलॉजी ऑफ एजुकेशन, 27, 909–933। DOI: 10.1007/s11218–023–09832–9
9. नीतो, एस. (2010). उनकी आँखों की रोशनी: बहुसांस्कृतिक शिक्षण समुदायों का निर्माण। टीचर्स कॉलेज प्रेस।
10. नॉडिंग्स, एन. (2005). विद्यालयों में देखभाल की चुनौती (द्वितीय संस्करण)। टीचर्स कॉलेज प्रेस।
11. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी). (2020). उच्च शिक्षा संस्थानों हेतु गुणवत्ता मानदंड। नई दिल्ली: यूजीसी।
12. सेगल, ए., एवं गौडेली, डब्ल्यू. (2007). सामाजिक अध्ययन पद्धति पाठ्यक्रम में सामाजिक मुद्दों पर सामाजिक चिंतन। टीचिंग एजुकेशन, 18(1), 77–92। DOI: 10.1080/10476210601151599
13. हॉन, के. एवं सहयोगी. (2025). शिक्षक तैयारी में आलोचनात्मक चेतना की आवश्यकता। सोशल एंड इमोशनल लर्निंग: रिसर्च, प्रैक्टिस एंड पॉलिसी, 5, 100119। DOI: 10.1016/j-sel.2025.100119